



parmeshwarkaniyam.org

परिशिष्ट 8d: शुद्धिकरण की व्यवस्थाएँ — मंदिर के बिना इन्हें मान पाना क्यों असम्भव है

यह पृष्ठ उस श्रृंखला का हिस्सा है जो परमेश्वर की उन व्यवस्थाओं की पड़ताल करती है जिन्हें केवल तभी माना जा सकता था जब यरूशलेम में मंदिर खड़ा था।

- [परिशिष्ट 8a: वे परमेश्वर की व्यवस्थाएँ जिन्हें मंदिर की आवश्यकता थी](#)
- [परिशिष्ट 8b: बलिदान — आज इन्हें मानना क्यों असम्भव है](#)
- [परिशिष्ट 8c: बाइबिल के पर्व — आज इनमें से कोई भी क्यों नहीं रखा जा सकता](#)
- [परिशिष्ट 8d: शुद्धिकरण की व्यवस्थाएँ — मंदिर के बिना इन्हें मानना क्यों असम्भव है \(यह पृष्ठ\)।](#)
- [परिशिष्ट 8e: दशमांश और पहिलौठे फल — आज इन्हें मानना क्यों असम्भव है](#)
- [परिशिष्ट 8f: परमप्रसाद सेवा — यीशु का अंतिम भोजन पास्का था](#)
- [परिशिष्ट 8g: नजीर और मन्नत की व्यवस्थाएँ — आज इन्हें मानना क्यों असम्भव है](#)
- [परिशिष्ट 8h: मंदिर से संबंधित आंशिक और प्रतीकात्मक आज्ञाकारिता](#)
- [परिशिष्ट 8i: क्रूस और मंदिर](#)

तोरा में विधिक शुद्धता और अशुद्धता से संबंधित विस्तृत नियम दिए गए हैं। ये आज्ञाएँ कभी भी समाप्त नहीं की गईं। यीशु ने इन्हें कभी रद्द नहीं किया। फिर भी, इस्राएल की अविश्वासयोग्यता के प्रत्युत्तर में, परमेश्वर ने राष्ट्र के बीच से मंदिर, वेदी, याजक व्यवस्था और अपना प्रकट निवास हटा लिया। इसी हटाए जाने के कारण, शुद्धिकरण से संबंधित आज्ञाएँ आज पालन योग्य नहीं हैं।

यद्यपि हम दुर्बल सृष्टि हैं, फिर भी परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोगों के प्रति प्रेम के कारण सदियों तक इस्राएल के बीच अपनी उपस्थिति स्थापित की (निर्गमन 15:17; 2 इतिहास 6:2; 1 राजा 8:12-13)। किंतु सन् 70 ईस्वी के बाद से वह मंदिर, जहाँ उसकी पवित्रता प्रकट होती और अनुभव की जाती थी, अब अस्तित्व में नहीं है।

व्यवस्था ने क्या आज्ञा दी

व्यवस्था ने वास्तविक और वस्तुनिष्ठ विधिक स्थितियों को परिभाषित किया: शुद्ध (ṭahor — tahor) और अशुद्ध (ṭamei — tamei)। मनुष्य सामान्य और अपरिहार्य जीवन स्थितियों के कारण अशुद्ध हो सकता था: प्रसव (लैव्यव्यवस्था 12:2-5), मासिक धर्म और अन्य शारीरिक स्राव (लैव्यव्यवस्था 15:19-30), तथा मृत शरीर का संपर्क (गिनती 19:11-13)। ये अवस्थाएँ पाप नहीं थीं और न ही अपराधबोध से जुड़ी थीं। ये केवल विधिक स्थितियाँ थीं, जिनका उद्देश्य पवित्र वस्तुओं तक पहुँच को सीमित करना था।

इन सभी अवस्थाओं के लिए व्यवस्था ने शुद्धिकरण की प्रक्रिया भी निर्धारित की। कभी केवल संध्या तक प्रतीक्षा करना पर्याप्त था, कभी धोना आवश्यक था, और कुछ मामलों में याजकीय सहभागिता और बलिदान अनिवार्य थे। मुख्य बात यह नहीं थी कि इस्राएल “अशुद्ध महसूस” करे, बल्कि यह थी कि परमेश्वर ने अपनी पवित्रता के चारों ओर वास्तविक और विधिक सीमाएँ स्थापित की थीं।

ये नियम अस्तित्व में क्यों थे

शुद्धता की व्यवस्था इसलिए अस्तित्व में थी क्योंकि परमेश्वर एक परिभाषित पवित्र स्थान में इस्राएल के बीच निवास करता था। तोरा स्वयं इसका कारण बताती है: इस्राएल को अशुद्धता से अलग रखा जाना था, ताकि परमेश्वर का निवास स्थान अपवित्र न हो और लोग अशुद्ध अवस्था में उसकी पवित्र उपस्थिति के पास जाकर मर न जाएँ (लैव्यव्यवस्था 15:31; गिनती 19:13)।

इसका अर्थ यह है कि अशुद्धता के नियम न तो जीवन-शैली की परंपराएँ थे और न ही स्वास्थ्य संबंधी सुझाव। वे पवित्रस्थान से संबंधित नियम थे। उनका लक्ष्य सदा एक ही था: परमेश्वर के निवास की रक्षा करना और उस तक पहुँच को नियंत्रित करना।

मंदिर केवल स्थान नहीं, बल्कि विधिक क्षेत्र था

पवित्रस्थान केवल एक भवन नहीं था जहाँ धार्मिक गतिविधियाँ होती थीं। वह वह विधिक क्षेत्र था जिसमें अनेक शुद्धता के नियम प्रभावी होते थे। अशुद्धता का महत्व इसलिए था क्योंकि एक पवित्र स्थान था जिसकी रक्षा करनी थी, पवित्र वस्तुएँ थीं जिन्हें सुरक्षित रखना था, और पवित्र सेवा थी जिसे बनाए रखना था। मंदिर ने सामान्य और पवित्र के बीच विधिक सीमा स्थापित की, और व्यवस्था ने उस सीमा को बनाए रखने की माँग की।

जब परमेश्वर ने इस्राएल की अविश्वासयोग्यता के प्रत्युत्तर में अपना निवास हटा लिया, तब उसने अपनी व्यवस्था को समाप्त नहीं किया; उसने उस विधिक क्षेत्र को हटा लिया जिसमें अनेक शुद्धिकरण नियम लागू हो सकते थे। निवास के बिना, नियंत्रित करने योग्य कोई “वैध निकटता” नहीं रहती और न ही कोई पवित्र स्थान जिसे अपवित्र होने से बचाया जाए।

मुख्य नियम और नियंत्रण प्रक्रियाएँ

लैव्यव्यवस्था 15 में घरेलू स्तर के अनेक विवरण दिए गए हैं: अशुद्ध बिस्तर, अशुद्ध आसन, धोना, और “संध्या तक अशुद्ध” होना। ये विवरण स्वतंत्र आज़ाएँ नहीं थे जिनका उद्देश्य एक स्थायी जीवन-शैली बनाना हो। ये केवल नियंत्रण प्रक्रियाएँ थीं, जिनका एकमात्र उद्देश्य अशुद्धता को परमेश्वर के निवास तक पहुँचने और पवित्र वस्तुओं को अपवित्र करने से रोकना था।

इसी कारण आज ये प्रक्रियाएँ स्वतंत्र “भक्ति अभ्यास” के रूप में कोई अर्थ नहीं रखतीं। जिस पवित्रस्थान की रक्षा के लिए इन्हें बनाया गया था, उसके बिना इन्हें दोहराना आज्ञाकारिता नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक नकल है। परमेश्वर ने कभी भी अपनी व्यवस्था के लिए विकल्पों को स्वीकृति नहीं दी। जब स्वयं परमेश्वर ने अपना पवित्र निवास हटा लिया हो, तब यह दिखावा करना कि वह अब भी खड़ा है, परमेश्वर का आदर नहीं करता।

सामान्य मासिक धर्म

तोरा में वर्णित अशुद्धताओं में सामान्य मासिक धर्म अद्वितीय है, क्योंकि यह पूर्वानुमेय, अपरिहार्य और केवल समय के द्वारा समाप्त होने वाला है। स्त्री सात दिन तक अशुद्ध रहती थी; जिस वस्तु पर वह लेटती या बैठती थी, वह अशुद्ध हो जाती थी; और उन वस्तुओं को छूने वाला व्यक्ति संध्या तक अशुद्ध रहता था (लैव्यव्यवस्था 15:19-23)। यदि कोई पुरुष उस समय उसके साथ एक ही बिस्तर पर लेटता, तो वह भी सात दिन तक अशुद्ध हो जाता था (लैव्यव्यवस्था 15:24)।

यह समय-आधारित अशुद्धता न तो याजक की माँग करती थी, न बलिदान की, और न वेदी की। इसका विधिक उद्देश्य पवित्र स्थान तक पहुँच को सीमित करना था। इसलिए ये नियम दैनिक जीवन में बाधा नहीं डालते थे और न ही यरूशलेम के निरंतर निकट रहने की आवश्यकता रखते थे। शुद्ध और अशुद्ध की स्थितियाँ इसलिए महत्वपूर्ण थीं क्योंकि परमेश्वर का निवास वास्तविक था और उस तक पहुँच उसकी व्यवस्था द्वारा नियंत्रित थी। निवास हट जाने के बाद, ये घरेलू शुद्धता के नियम विधिक रूप से लागू नहीं रह जाते और इसलिए आज पालन योग्य नहीं हैं।

महत्वपूर्ण स्पष्टीकरण: मासिक धर्म के समय स्त्री के साथ यौन संबंध का निषेध एक पूर्णतः अलग नियम है। यह शुद्धिकरण प्रक्रिया नहीं है और इसका अर्थ या प्रवर्तन मंदिर पर निर्भर नहीं करता (लैव्यव्यवस्था 18:19; लैव्यव्यवस्था 20:18)। यह एक अत्यंत गंभीर और स्वतंत्र आज्ञा है, जिसका आज भी पालन किया जाना आवश्यक है।

असामान्य रक्तस्राव

सामान्य मासिक चक्र से बाहर होने वाला रक्तस्राव एक अलग श्रेणी में रखा गया था और इसके पूर्ण होने के लिए मंदिर पर निर्भरता थी। स्त्री रक्तस्राव की अवधि में अशुद्ध रहती थी, और उसके समाप्त होने पर उसे दिन गिनने होते थे और फिर पवित्रस्थान के द्वार पर याजक के पास बलिदान लाने होते थे (लैव्यव्यवस्था 15:25-30)। यह “केवल समय” की श्रेणी नहीं थी, बल्कि “याजक और बलिदान” की श्रेणी थी। इसलिए, क्योंकि परमेश्वर ने इस व्यवस्था को हटा दिया है, यह आज पालन योग्य नहीं है।

मृत शरीर की अशुद्धता

मृत शरीर के संपर्क से उत्पन्न अशुद्धता एक अत्यंत गंभीर अवस्था थी, जो सीधे पवित्रस्थान को खतरे में डालती थी। तोरा यहाँ अत्यधिक गंभीर भाषा का प्रयोग करती है: जो व्यक्ति परमेश्वर के निवास को अपवित्र करता था, उसे काट दिया जाना था, और इस अपवित्रता को परमेश्वर के पवित्र स्थान के विरुद्ध सीधा अपराध माना गया था (गिनती 19:13; गिनती 19:20)। निर्धारित शुद्धिकरण पूरी तरह से परमेश्वर द्वारा नियुक्त साधनों और कार्यशील पवित्रस्थान व्यवस्था पर निर्भर था। मंदिर के विधिक क्षेत्र के बिना, यह श्रेणी आज्ञा के अनुसार विधिक रूप से हल नहीं की जा सकती।

जब परमेश्वर ने अपना निवास हटा लिया, तब क्या बदला

परमेश्वर ने न्याय में मंदिर, वेदी और लेवीय याजक व्यवस्था को हटा लिया। इस हटाए जाने के साथ ही शुद्धता की पूरी व्यवस्था अपना विधिक क्षेत्र खो बैठी। अब न कोई पवित्र स्थान है जिसे संरक्षित किया जाए, न कोई वैध निकटता जिसे नियंत्रित किया जाए, और न ही वह नियुक्त याजक व्यवस्था जो व्यवस्था द्वारा माँगे गए कार्यों को पूरा करे।

इसलिए आज कोई भी शुद्धिकरण आज्ञा व्यवहार में नहीं लाई जा सकती—इसलिए नहीं कि व्यवस्था समाप्त हो गई, बल्कि इसलिए कि परमेश्वर ने उस विधिक क्षेत्र को हटा लिया जिसने उन्हें प्रभावी बनाया था। व्यवस्था अब भी स्थिर है; मंदिर नहीं है।

प्रतीकात्मक “शुद्धिकरण” क्यों अवज्ञा है

कुछ लोग परमेश्वर की व्यवस्था को निजी अनुष्ठानों, “आध्यात्मिक” धोनियों या घरेलू पुनराभिनय से बदलने का प्रयास करते हैं। लेकिन परमेश्वर ने किसी भी प्रकार के विकल्प को स्वीकृति नहीं दी। इस्राएल को कभी यह स्वतंत्रता नहीं दी गई कि वे शुद्धिकरण के नए रूप गढ़ लें। आज्ञाकारिता का अर्थ था: वही करना जो परमेश्वर ने आज्ञा दी, उसी स्थान पर जिसे उसने चुना, और उन्हीं सेवकों के द्वारा जिन्हें उसने नियुक्त किया।

जब परमेश्वर आज्ञाकारिता के उपकरण हटा देता है, तब विश्वासयोग्य प्रतिक्रिया नकल नहीं होती। विश्वासयोग्य प्रतिक्रिया यह है कि जो परमेश्वर ने किया है, उसे स्वीकार किया जाए, मानव आविष्कारों को अस्वीकार किया जाए, और उन आज्ञाओं का आदर किया जाए जिन्हें वर्तमान में पूरा नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष

शुद्धिकरण के नियम कभी समाप्त नहीं किए गए। वे इसलिए अस्तित्व में थे क्योंकि परमेश्वर इस्राएल के बीच निवास करता था और अपनी पवित्र उपस्थिति तक पहुँच को नियंत्रित करता था। इस्राएल की अविश्वासयोग्यता के प्रत्युत्तर में, परमेश्वर ने अपना निवास, मंदिर और याजक व्यवस्था हटा ली। इसी हटाए जाने के कारण, पवित्रस्थान-आधारित शुद्धता की व्यवस्था आज पालन योग्य नहीं है। हम उन सभी आज्ञाओं का पालन करते हैं जो अब भी पालन योग्य हैं, और जिन आज्ञाओं को परमेश्वर ने अस्थायी रूप से असंभव बना दिया है, उनका सम्मान करते हैं—उसके कार्यों का आदर करके और प्रतीकात्मक विकल्पों को अस्वीकार करके।